B.A. PART - 1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय- पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)

आधुनिककाल

भाग-1

प्रश्न:- द्विवेदी-युग की काव्यगत विशेषताओं का परिचय दें।

उत्तर:- भारतेन्दु युग में हिन्दी कविता के जिस आधुनिक रूप का आरम्भ हुआ, द्विवेदी युग में उसका विकास दिखाई देता है, महावीर प्रसाद द्विवेदी इस युग की साहित्यिक चेतना के सूत्रधार हैं। इस युग के साहित्य में जो नवीन आदर्शों की प्रतिष्ठा हुई उसका समस्त श्रेय द्विवेदी जी को है, इस युग में कविता, निबन्ध तथा आलोचना के क्षेत्र में पर्याप्त प्रौढ़ता का समावेश हुआ, कविता की भाषा की दृष्टि से इस युग में बहुत बड़ा परिवर्तन आया। भारतेन्दु युग में कवियों ने यद्यपि गद्य के क्षेत्र में खड़ी बोली का सफल प्रयोग किया है, परन्तु कविता की भाषा ब्रजभाषा ही रही। द्विवेदी युग में साहित्य की समस्त विधाओं – कविता, निबन्ध, आलोचना, कथा, उपन्यास आदि में खड़ीबोली का एकछत्र साम्राज्य स्थापित हो गया। भाव, भाषा और विषय सभी दृष्टियों से इस युग के साहित्य में विविधता एवं अनेकरूपता दृष्टिगोचर होती है। इस युग की काव्यगत प्रवृत्तियाँ या विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) **राष्ट्रीय - भावना :-**

भारतेन्दु-युग की अपेक्षा द्विवेदी-युग में राष्ट्रीय भावना अधिक व्यापक रूप में प्रकट हुई है। भारतेन्दु युग के कवियों में देश-प्रेम मुख्य रूप से भाषा, वेशभूषा, भोजन तक सीमित है, उसमें अतीत का वर्णन भी है, पर उसमें निराशा की भावना अधिक है, परन्तु द्विवेदी युग के कवियों की देश-प्रेम- भावना का आलम्बन अतीत का स्वर्णिम गौरव है, भारतीय संस्कृति की महानता है। इस युग के कवियों ने अतीत काल के गौरवमय आख्यानों द्वारा भारतीयों में देश-प्रेम की भावना को जागृत किया। इस युग की कविता में जातीय आदर्शों से ऊपर उठकर क्रमशः राष्ट्रीय आदर्शों को ग्रहण किया गया और भारत की अखण्डता और उसकी स्वतन्त्रता का स्वर मुखरित हुआ। श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, गोपालशरण सिंह, मैथिलीशरण गुप्त

अयोध्या सिंह उपाध्याय, सियारामशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, माखनलाल चतुर्वेदी, सत्य नारायण कविरत्न, और इस युग के प्रायः सभी मुख्य कवियों ने अपनी मातृभूमि के प्रति हृदय का सच्चा स्नेह प्रकट किया है। देश की वर्तमान दुर्दशा और अतीत के सुनहले स्वप्नों को काव्य में चित्रित करते हुए इन कवियों ने देश की भावी उन्नति में दृढ़ विश्वास दिखाया है।

(2) सामाजिक और धार्मिक चेतना :-

भारतेन्दु-युग की तरह द्विवेदी युग की रचनाओं में भी समाज-सुधार की भावना का विशद चित्रण है। स्त्री-शिक्षा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, दहेज-प्रथा, अन्धविश्वास, अनमेल विवाह आदि विषयों पर द्विवेदी युग के कवियों ने भी रचनाएँ लिखी हैं। इस युग के कवियों ने समाज की सर्वांग उन्नति को लक्ष्य बनाकर उपरोक्त विषयों पर अपने विचार प्रकट किए हैं।

इस युग के कवियों की धार्मिक चेतना भी पर्याप्त उदार और व्यापक है। इस युग की धार्मिक-भावना केवल ईश्वर (राम और कृष्ण आदि) के गुण-गान तक सीमित नहीं, उसमें मानवता के आदर्शों की प्रतिष्ठा है। विश्व-प्रेम तथा जनसेवा की भावना इस युग की धार्मिक भावना का मुख्य अंग है। गोपालशरण सिंह की कविता से इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है:-

"जग की सेवा करना ही बस है सब सारों का सार।
विश्व प्रेम के बंधन ही में मुझको मिला मुक्ति का द्वार।"

(शेष बचा है)

पता :-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 20.02.2023 | मो०नं० - 7909045087